



सन्क्षेप-रामायणम् sankṣepa-rāmāyaṇam

Abridged Journey of Rāma

*Read and hear yourself in Sanskrit -
with cognition & joy!*

Hindi Translation

<https://joyofsanskrit.org/>



The question vālmīki posed nārada led him to outline rāma's journey, contained in the first 79 ślokaś of the vālmīki-rāmāyaṇam.

A word-separated view of Sanskrit for the sankṣepa rāmāyaṇam is presented here.

The undoing of typographical representation of external phonetic blending between distinct words and inside compound words makes the grammatically specified Sanskrit composition directly visible. This *word separated view* facilitates reading of text and direct exposure to the content of the Sanskrit composition.

A complete *grammatical decomposition of the text* follows the word separated view at <https://joyofsanskrit.org/>

Sanskrit Compostions Made Transparent & Accessible
<https://joyofsanskrit.org/>



तपः-स्व-अध्याय-निरतम् तपस्वी वाक्-विदाम् वरम् ।

नारदम् परिपप्रच्छ वाल्मीकिः मुनि-पुंगवम् ॥१-१॥

tapah-sva-adhyāya-niratam tapasvī vāk-vidām varam |
nāradam paripapraccha vālmīkiḥ muni-puṅgavam ||1-1||

कः नु अस्मिन् साम्प्रतम् लोके गुणवान् कः च वीर्यवान् ।

धर्म-ज्ञः च कृत-ज्ञः च सत्य-वाक्यः दृढ-व्रतः ॥१-२॥

kaḥ nu asmin sāmpratam loke guṇavān kaḥ ca vīryavān |
dharma-jñāḥ ca kṛta-jñāḥ ca satya-vākyaḥ dṛḍha-vrataḥ ||1-2||

चारित्रेण च कः युक्तः सर्व-भूतेषु कः हितः ।

विद्वान् कः कः समर्थः च कः च एक-प्रिय-दर्शनः ॥१-३॥

cāritreṇa ca kaḥ yuktaḥ sarva-bhūteṣu kaḥ hitaḥ |
vidvān kaḥ kaḥ samarthaḥ ca kaḥ ca eka-priya-darśanaḥ ||1-3||

ऋषि वाल्मीकि ने नारद से पूछा, जो लगातार तपस्या और स्वाध्याय में लगे रहते हैं, जो भाषा के जानकारों में श्रेष्ठ और ऋषियों में उत्तम हैं ।

इस समय दुनिया में ऐसा कौन है जो सचमुच गुणी है, और कौन है जो वीर है, धर्म और पूर्व कर्मों का जानकार है, और जो अपनी बात पर सच्चा और अपने संकल्प पर अडिग है ?

साथ ही, अच्छे आचरण वाला कौन है? सभी प्राणियों के प्रति दयालु कौन है? कौन विद्वान और समर्थ है? और कौन देखने में अत्यंत सुखद है ?



आत्मवान् कः जित-क्रोधः मतिमान् कः अनसूयकः ।

कस्य बिभ्यति देवाः च जात-रोषस्य संयुगे ॥१-४॥

ātmavān kaḥ jita-krodhaḥ matimān kaḥ anasūyakaḥ ।

kasya bibhyati devāḥ ca jāta-roṣasya saṁyuge ॥1-4॥

एतत् इच्छामि अहम् श्रोतुम् परम् कौतूहलम् हि मे ।

महर्षे त्वम् समर्थः असि ज्ञातुम् एवम् विधम् नरम् ॥१-५॥

etat icchāmi aham śrotum param kautūhalam hi me ।

maharṣe tvam samarthaḥ asi jñātum evam vidham naram ॥1-5॥

श्रुत्वा च एतत् त्रि-लोक-ज्ञः वाल्मीकेः नारदः वचः ।

श्रूयताम् इति च आमन्त्र्य प्रहृष्टः वाक्यम् अब्रवीत् ॥१-६॥

śrutvā ca etat tri-loka-jñaḥ vālmīkeḥ nāradaḥ vacaḥ ।

śrūyatām iti ca āmantrya prahrṣṭaḥ vākyaṁ abravīt ॥1-6॥

आत्म-ज्ञानी कौन है? जिसने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ली है, जो बुद्धिमान है और ईर्ष्या-रहित है? जिसके क्रोध से, जो टकराव के समय उत्पन्न होता है, देवता भी भयभीत होते हैं ?

मैं यह सुनना चाहता हूँ। मेरी उत्सुकता बहुत अधिक है। हे महान ऋषि, आप ऐसे व्यक्ति को पहचानने में समर्थ हैं।

वाल्मीकि की यह बात सुनकर, तीनों लोकों के ज्ञाता नारद ने भी इशारा करते हुए कहा—"इसे सुनो"—और उत्साह के साथ यह वाक्य कहा।



बहवः दुर्लभाः च एव ये त्वया कीर्तिताः गुणाः ।

मुने वक्ष्यामि अहम् बुद्ध्वा तैः युक्तः श्रूयताम् नरः ॥१-७॥

bahavaḥ durlabhāḥ ca eva ye tvayā kīrtitāḥ guṇāḥ ।

mune vakṣyāmi aham buddhvā taiḥ yuktaḥ śrūyatām naraḥ ॥1-7॥

इक्ष्वाकु-वंश-प्रभवः रामः नाम जनैः श्रुतः ।

नियत-आत्मा महा-वीर्यः द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥१-८॥

ikṣvāku-vaṃśa-prabhavaḥ rāmaḥ nāma janaiḥ śrutaḥ ।

niyata-ātmā mahā-vīryaḥ dyutimān dhṛtimān vaśī ॥1-8॥

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान् शत्रु-निबर्हणः ।

विपुल-अंसः महा-बाहुः कम्बु-ग्रीवः महा-हनुः ॥१-९॥

buddhimān nītimān vāgmī śrīmān śatru-nibarhaṇaḥ ।

vipula-aṃsaḥ mahā-bāhuḥ kambu-grīvaḥ mahā-hanuḥ ॥1-9॥

आपके बताए गए ये गुण सचमुच बहुत सारे और दुर्लभ हैं। 'जो व्यक्ति इन गुणों से युक्त हो' - हे मुनि, इन्हें अच्छी तरह समझकर ही मैं कहूँगा। कृपया इसे सुनें।

इक्ष्वाकु वंश में जन्मे राम को लोग बहुत मानते हैं। वे आत्म-संयमी, अत्यंत वीर, तेजस्वी, दृढ़-निश्चयी और संयमित हैं।

वे समझदारी, मार्गदर्शन, वाक्-शक्ति और प्रभावशाली व्यक्तित्व से संपन्न हैं और शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं। उनके कंधे चौड़े, भुजाएँ शक्तिशाली, गर्दन शंख जैसी और जबड़ा मजबूत है।



महा-उरस्कः महा-इष्वासः गूढ-जत्रुः अरिन्दमः ।

आजानु-बाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥१-१०॥

mahā-uraskaḥ mahā-iṣvāsaḥ gūḍha-jatruḥ arindamaḥ |
ājānu-bāhuḥ suśirāḥ sulalāṭaḥ suvikramaḥ || 1-10 ||

चौड़ी छाती और बेहतरीन तीरंदाज, जिनकी
हँसली छिपी हुई है, वे दुश्मनों को हराते हैं।
घुटनों तक पहुँचती भुजाएँ, शानदार सिर, ऊँचा
माथा और आकर्षक चाल-ढाल ।

समः सम-विभक्त-अङ्गः स्निग्ध-वर्णः प्रतापवान् ।

पीन-वक्षाः विशाल-अक्षः लक्ष्मीवान् शुभ-लक्षणः ॥१-११॥

samaḥ sama-vibhakta-aṅgaḥ snigdha-varṇaḥ pratāpavān |
pīna-vakṣāḥ viśāla-akṣaḥ lakṣmīvān śubha-lakṣaṇaḥ || 1-11 ||

उनका शरीर संतुलित और सुडौल है, वे
आकर्षक और शक्तिशाली हैं; उनकी छाती
चौड़ी है, आँखें बड़ी हैं और उनके नैन-नक्श
सुंदर और शुभ हैं ।

धर्म-ज्ञः सत्य-संधः च प्रजानाम् च हिते रतः ।

यशस्वी ज्ञान-संपन्नः शुचिः वश्यः समाधिमान् ॥१-१२॥

dharma-jñāḥ satya-saṁdhaḥ ca prajānām ca hite rataḥ |
yaśasvī jñāna-saṁpannaḥ śuciḥ vaśyaḥ samādhimān || 1-12 ||

वे धर्म को जानते हैं, सत्य से जुड़े हैं और
लोगों के कल्याण में लगे रहते हैं। वे तेजस्वी,
ज्ञानी, पवित्र, संयमित और ध्यानमग्न रहने
वाले हैं ।



रक्षिता जीव-लोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ।

वेद-वेदाङ्ग-तत्त्व-ज्ञः धनुः-वेदे च निष्ठितः ॥१-१३॥

rakṣitā jīva-lokasya dharmasya parirakṣitā ।

veda-vedāṅga-tattva-jñāḥ dhanuḥ-vede ca niṣṭhitaḥ ॥1-13॥

वे जीवित प्राणियों की दुनिया के रक्षक और धर्म के संरक्षक हैं। वे वेदों और उनके अंगों के सार को जानते हैं और तीरंदाजी की विद्या में निपुण हैं।

सर्व-शास्त्र-अर्थ-तत्त्व-ज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान् ।

सर्व-लोक-प्रियः साधुः अदीन-आत्मा विचक्षणः ॥१-१४॥

sarva-śāstra-artha-tattva-jñāḥ smṛtimān pratibhānavān ।

sarva-loka-priyaḥ sādhuḥ adīna-ātmā vicakṣaṇaḥ ॥1-14॥

उन्हें सभी शिक्षाप्रद ग्रंथों का उद्देश्य और सार पता है, उनकी याददाश्त अच्छी है और वे बहुत बुद्धिमान हैं। वे सबकी पसंद हैं, परोपकारी हैं, मन से शांत और खुशमिजाज हैं, और उनमें सही-गलत को पहचानने की समझ है।

सर्वदा अभिगतः सद्भिः समुद्रः इव सिन्धुभिः ।

आर्यः सर्व-समः च एव सदा एक-प्रिय-दर्शनः ॥१-१५॥

sarvadā abhigataḥ sadbhiḥ samudraḥ iva sindhubhiḥ ।

āryaḥ sarva-samaḥ ca eva sadā eka-priya-darśanaḥ ॥1-15॥

अच्छे लोग हमेशा उनके पास वैसे ही आते हैं जैसे नदियाँ समुद्र के पास। वे सम्मानित हैं और सचमुच सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं; वे हमेशा एक अनोखे और मिलनसार व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं।



स च सर्व-गुण-उपेतः कौसल्या-आनन्द-वर्धनः ।

समुद्रः इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवान् इव ॥१-१६॥

sa ca sarva-guṇa-upetaḥ kausalyā-ānanda-vardhanaḥ ।
samudraḥ iva gāmbhīrye dhairyeṇa himavān iva ॥1-16॥

वे सभी गुणों से संपन्न हैं और कौशल्या की प्रसन्नता को बढ़ाने वाले हैं। उनका चरित्र सागर के समान गंभीर है और उनका संकल्प हिमालय के समान अडिग है।

विष्णुना सदृशः वीर्ये सोमवत्-प्रिय-दर्शनः ।

काल-अग्नि-सदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवी-समः ॥१-१७॥

viṣṇunā sadṛśaḥ vīrye somavat-priya-darśanaḥ ।
kāla-agni-sadṛśaḥ krodhe kṣamayā pṛthivī-samaḥ ॥1-17॥

वीरता में भगवान विष्णु के समान और प्रिय चंद्रमा के समान सुंदर रूप वाले; क्रोध में प्रलय की अग्नि के समान और धैर्य में पृथ्वी के समान।

धनदेन समः त्यागे सत्ये धर्मः इव अपरः ।

तम् एवम् गुण-संपन्नम् रामम् सत्य-पराक्रमम् ॥१-१८॥

dhanadena samaḥ tyāge satye dharmaḥ iva aparaḥ ।
tam evam guṇa-saṃpannam rāmam satya-parākramam ॥1-18॥

दान देने में कुबेर के समान, सत्यनिष्ठा में धर्म के समान और अतुलनीय। ऐसे गुणों से संपन्न, सच्चे वीर वे राम...



ज्येष्ठम् श्रेष्ठ-गुणैः युक्तम् प्रियम् दशरथः सुतम् ।

यौवराज्येन संयोज्यम् ऐच्छत् प्रीत्या महीपतिः ॥१-१९॥

jyeṣṭham śreṣṭha-guṇaiḥ yuktam priyam daśarathaḥ sutam |
yauvarājyena saṁyoktum aicchat prītyā mahīpatiḥ ||1-19||

तस्य अभिषेक-सम्भारान् दृष्ट्वा भार्या अथ कैकयी ।

पूर्वम् दत्त-वरा देवी वरम् एनम् अयाचत ।

विवासनम् च रामस्य भरतस्य अभिषेचनम् ॥१-२०॥

tasya abhiṣeka-sambhārān dr̥ṣṭvā bhāryā atha kaikayī |
pūrvam datta-varā devī varam enam ayācata |
vivāsanam ca rāmasya bharatasya abhiṣecanam ||1-20||

स सत्य-वचनात् राजा धर्म-पाशेन संयतः ।

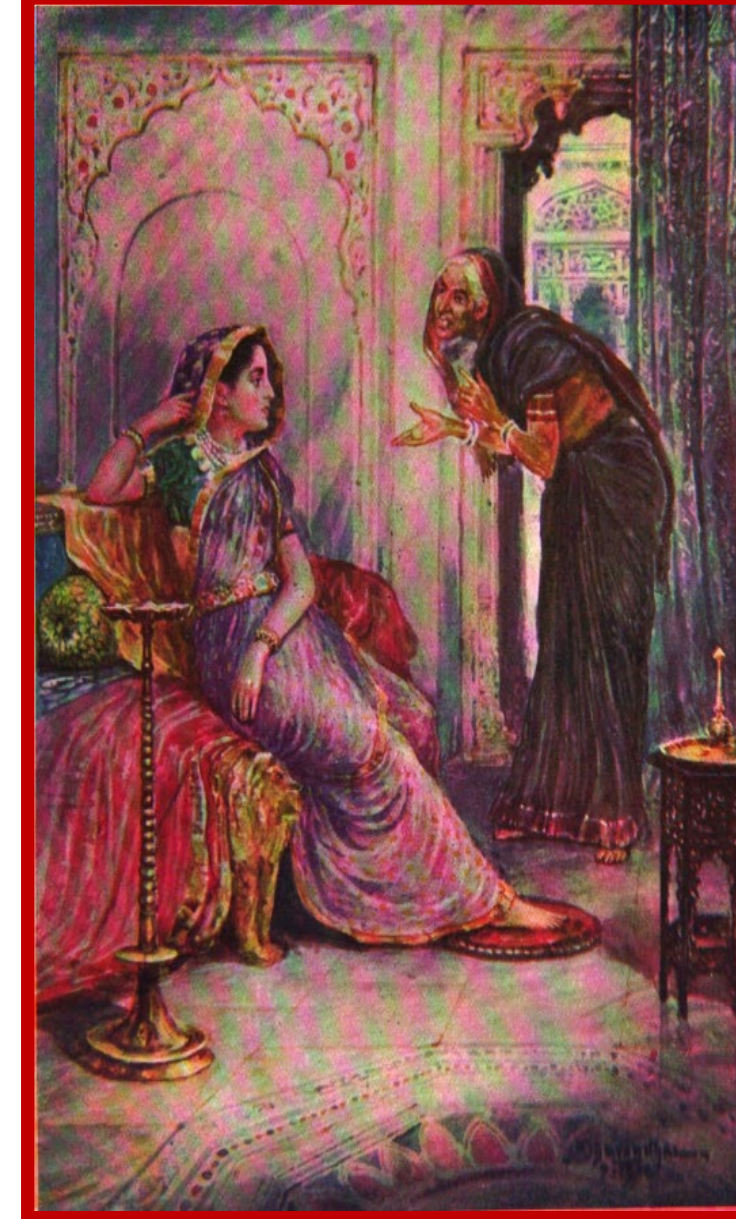
विवासयामास सुतम् रामम् दशरथः प्रियम् ॥१-२१॥

sa satya-vacanāt rājā dharma-pāśena saṁyataḥ |
vivāsayāmāsa sutam rāmam daśarathaḥ priyam ||1-21||

पृथ्वी के स्वामी दशरथ ने स्नेहवश अपने
सबसे बड़े और अत्यंत गुणवान प्रिय पुत्र को
युवराज पद पर नियुक्त करने की इच्छा की ।

राज्याभिषेक की तैयारियाँ देखकर, उनकी
पत्नी देवी कैकेयी ने—जिन्हें पहले वरदान
मिला हुआ था—यह वरदान माँगा: राम का
वनवास और भरत का राज्याभिषेक ।

धर्म के बंधन के कारण राजा सत्य-वचन से
बंधे हुए थे। दशरथ ने अपने प्रिय पुत्र राम को
वनवास भेज दिया ।



स जगाम वनम् वीरः प्रतिज्ञाम् अनुपालयन् ।

पितुः वचन-निर्देशात् कैकेय्याः प्रिय-कारणात् ॥१-२२॥

sa jagāma vanam vīraḥ pratijñām anupālayan |
pituḥ vacana-nirdeśāt kaikeyyāḥ priya-kāraṇāt ||1-22||

कैकेयी के प्रति प्रेम के कारण पिता के वचनों का पालन करते हुए, वे वीर पुरुष वन को चले गए ।

तम् व्रजन्तम् प्रियः भ्राता लक्ष्मणः अनुजगाम ह ।

स्नेहात् विनय-संपन्नः सुमित्रा-आनन्द-वर्धनः ॥१-२३॥

tam vrajantam priyaḥ bhrātā lakṣmaṇaḥ anujagāma ha |
snehāt vinaya-saṁpannaḥ sumitrā-ānanda-varḍhanaḥ ||1-23||

सचमुच, सुमित्रा की खुशी बढ़ाने वाले और अनुशासन का पालन करने वाले प्रिय भाई लक्ष्मण प्रेमवश उनके पीछे-पीछे चल पड़े ।

सर्व-लक्षण-संपन्ना नारीणाम् उत्तमा वधूः ।

सीता अपि अनुगता रामम् शशिनम् रोहिणी यथा ॥१-२४॥

sarva-lakṣaṇa-saṁpannā nārīṇām uttamā vadhūḥ |
sītā api anugatā rāmam śaśinam rohiṇī yathā ||1-24||

स्त्रियों में सर्वोत्तम गुणों से संपन्न दुल्हन सीता भी राम के पीछे-पीछे चल पड़ीं, ठीक वैसे ही जैसे रोहिणी चंद्रमा के पीछे चलती है ।



पौरैः अनुगतः दूरम् पित्रा दशरथेन च ।

शृङ्गवेर-पुरे सूतम् गङ्गा-कूले व्यसर्जयत् ॥१-२५॥

pauraiḥ anugataḥ dūram pitrā daśarathena ca ।

śṛṅgavera-pure sūtam gaṅgā-kūle vyasarjayat ॥1-25॥

शहर के लोग और पिता दशरथ काफी दूर तक उनके पीछे-पीछे आए। गंगा के किनारे स्थित शृंगवेरपुर शहर में उन्होंने सारथी को विदा कर दिया ।

ते वनेन वनम् गत्वा नदीः तीर्त्वा बहु-उदकाः ।

चित्रकूटम् अनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात् ॥१-२६॥

te vanena vanam gatvā nadīḥ tīrtvā bahu-udakāḥ ।

citrakūṭam anuprāpya bharadvājasya śāsanāt ॥1-26॥

वे एक जंगल से दूसरे जंगल होते हुए, भरपूर पानी वाली नदियों को पार करके और भरद्वाज के निर्देशों से चित्रकूट पहुँचे...

रम्यम् आवसथम् कृत्वा रममाणाः वने त्रयः ।

देव-गन्धर्व-संकाशाः तत्र ते न्यवसन् सुखम् ॥१-२७॥

ramyam āvasatham kṛtvā ramamāṇāḥ vane trayah ।

deva-gandharva-saṁkāśāḥ tatra te nyavasan sukham ॥1-27॥

...एक सुंदर कुटिया बनाकर और जंगल का आनंद लेते हुए, वे तीनों—जो तेजस्वी गंधर्वों जैसे लग रहे थे—वहाँ आराम से रहने लगे ।



चित्रकूटम् गते रामे पुत्र-शोक-आतुरः तदा ।

राजा दशरथः स्वर्गम् जगाम विलपन् सुतम् ॥१-२८॥

citrakūṭam gate rāme putra-śoka-āturaḥ tadā ।

rājā daśarathaḥ svargam jagāma vilapan sutam ॥1-28॥

मृते तु तस्मिन् भरतः वशिष्ठ-प्रमुखैः द्विजैः ।

नियुज्यमानः राज्याय न ऐच्छत् राज्यम् महा-बलः ।

स जगाम वनम् वीरः राम-पाद-प्रसादकः ॥१-२९॥

mṛte tu tasmin bharataḥ vasiṣṭha-pramukhaiḥ dvijaiḥ ।

niyujamānaḥ rājyāya na aicchat rājyam mahā-balaḥ ।

sa jagāma vanam vīraḥ rāma-pāda-prasādakaḥ ॥1-29॥

पादुके च अस्य राज्याय न्यासम् दत्त्वा पुनः पुनः ।

निवर्तयामास ततः भरतम् भरत-अग्रजः ॥१-३०॥

pāduke ca asya rājyāya nyāsam dattvā punaḥ punaḥ ।

nivartayāmāsa tataḥ bharatam bharata-agrajaḥ ॥1-30॥

जब राम चित्रकूट चले गए, तब पुत्र-शोक से व्याकुल राजा दशरथ अपने पुत्र के लिए विलाप करते हुए दिव्य लोक को चले गए ।

लेकिन जब उनकी मृत्यु हुई, तो महान भरत को वशिष्ठ के नेतृत्व में दीक्षा प्राप्त लोगों ने राज्य संभालने के लिए कहा, पर उन्होंने राज्य लेने की इच्छा नहीं की। वे वीर पुरुष जंगल चले गए, ताकि राम के चरणों में उन्हें सही राह मिल सके ।

फिर भरत के बड़े भाई ने बार-बार भरत को लौटा दिया, और साथ ही राज्य के अधिकार के प्रतीक के तौर पर अपनी खड़ाऊँ भी उन्हें सौंप दीं ।



स कामम् अनवाप्य एव राम-पादौ उपस्पृशन् ।

नन्दिग्रामे अकरोत् राज्यम् राम-आगमन-काङ्क्षया ॥१-३१॥

sa kāmam anavāpya eva rāma-pādaupaspṛśan |
nandigrāme akarot rājyam rāma-āgamana-kāṅkṣayā ||1-31||

अपनी इच्छा पूरी न होने पर भी, राम के चरणों को छूकर, उन्होंने राम के आगमन की कामना के साथ नन्दीग्राम में राज्य किया ।

रामः तु पुनर्-आलक्ष्य नागरस्य जनस्य च ।

तत्र आगमनम् एकाग्रे दण्डकान् प्रविवेश ह ॥१-३२॥

rāmaḥ tu punar-ālakṣya nāgarasya janasya ca |
tatra āgamanam ekāgre daṇḍakān praviveśa ha ||1-32||

वहाँ भी शहर के लोगों के आने को बार-बार देखने के बाद, राम ने पूरी सावधानी के साथ दण्डक वन में प्रवेश किया ।

विराधम् राक्षसम् हत्वा शरभङ्गम् ददर्श ह ।

सुतीक्ष्णम् च अपि अगस्त्यम् च अगस्त्य-भ्रातरम् तथा ॥१-३३॥

virādhām rākṣasam hatvā śarabhaṅgam dadarśa ha |
sutīkṣṇam ca api agastyam ca agastya-bhrātaram tathā ||1-33||

भयानक विराध का वध करने के बाद उन्होंने शरभंग, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य और अगस्त्य के भाई के भी दर्शन किए ।



अगस्त्य-वचनात् च एव जग्राह ऐन्द्रम् शरासनम् ।

खड्गम् च परम-प्रीतः तूणी च अक्षय-सायकौ ॥१-३४॥

agastya-vacanāt ca eva jagrāha aindram śara-āsanam |
khaḍgam ca parama-prītaḥ tūṇī ca akṣaya-sāyakau ||1-34||

साथ ही, अगस्त्य के वचनों से अत्यंत प्रसन्न होकर उन्होंने इंद्र का धनुष, तलवार, तरकशों की जोड़ी और कभी न खत्म होने वाले बाण स्वीकार किए ।

वसतः तस्य रामस्य वने वन-चरैः सह ।

ऋषयः अभ्यागमन् सर्वे वधाय असुर-रक्षसाम् ॥१-३५॥

vasataḥ tasya rāmasya vane vana-caraiḥ saha |
ṛṣayaḥ abhyāgaman sarve vadhāya asura-rakṣasām ||1-35||

जब राम वन के जीवों के साथ वन में रह रहे थे, तब सभी ऋषि असुरों का वध करने के लिए उनके पास आए ।

तेन तत्र एव वसता जनस्थान-निवासिनी ।

विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी काम-रूपिणी ॥१-३६॥

tena tatra eva vasatā janasthāna-nivāsinī |
virūpitā śūrpaṇakhā rākṣasī kāma-rūpiṇī ||1-36||

वहाँ रहते हुए, उन्होंने ही जनस्थान में रहने वाली और मनचाहा रूप धारण करने वाली राक्षसी शूर्पणखा को विरूपित कर दिया था ।



ततः शूर्पणखा-वाक्यात् उद्युक्तान् सर्व-राक्षसान् ।

खरम् त्रि-शिरसम् च एव दूषणम् च एव राक्षसम् ॥१-३७॥

tataḥ śūrpaṇakhā-vākyāt udyuktān sarva-rākṣasān |

kharam tri-śīrasam ca eva dūṣaṇam ca eva rākṣasam ||1-37||

फिर शूर्पणखा की बात सुनकर, वहाँ मौजूद सभी राक्षस—खर, त्रिशिरा और दूषण—सक्रिय हो उठे...

निजघान रणे रामः तेषाम् च एव पद-अनुगान् ।

रक्षसाम् निहतानि आसन् सहस्राणि चतुर्दश ॥१-३८॥

nijaghāna raṇe rāmaḥ teṣām ca eva pada-anugān |

rakṣasām nihatāni āsan sahasrāṇi caturdaśa ||1-38||

...युद्ध में राम ने उन्हें और उनके अनुयायियों को भी मार डाला। चौदह हजार राक्षस मारे गए ।

ततः ज्ञाति-वधम् श्रुत्वा रावणः क्रोध-मूर्छितः ।

सहायम् वरयामास मारीचम् नाम राक्षसम् ॥१-३९॥

tataḥ jñāti-vadham śrutvā rāvaṇaḥ krodha-mūrchitaḥ |

sahāyam varayāmāsa mārīcam nāma rākṣasam ||1-39||

फिर अपने संबंधियों के मारे जाने की बात सुनकर, क्रोध से बौखलाए रावण ने मारीच नाम के राक्षस को अपना सहयोगी चुना ।



वार्यमाणः सुबहुशः मारीचेन स रावणः ।

न विरोधः बलवता क्षमः रावण तेन ते ॥१-४०॥

vāryamāṇaḥ subahuśaḥ mārīcena sa rāvaṇaḥ |
na virodhaḥ balavatā kṣamaḥ rāvaṇa tena te ||1-40||

मारीच बार-बार रावण को रोकता है। "हे रावण, उस शक्तिशाली से युद्ध करना तुम्हारे लिए असहनीय है।"

अनादृत्य तु तत् वाक्यम् रावणः काल-चोदितः ।

जगाम सह-मारीचः तस्य आश्रम-पदम् तदा ॥१-४१॥

anādr̥tya tu tat vākyaṁ rāvaṇaḥ kāla-coditaḥ |
jagāma saha-mārīcaḥ tasya āśrama-padam tadā ||1-41||

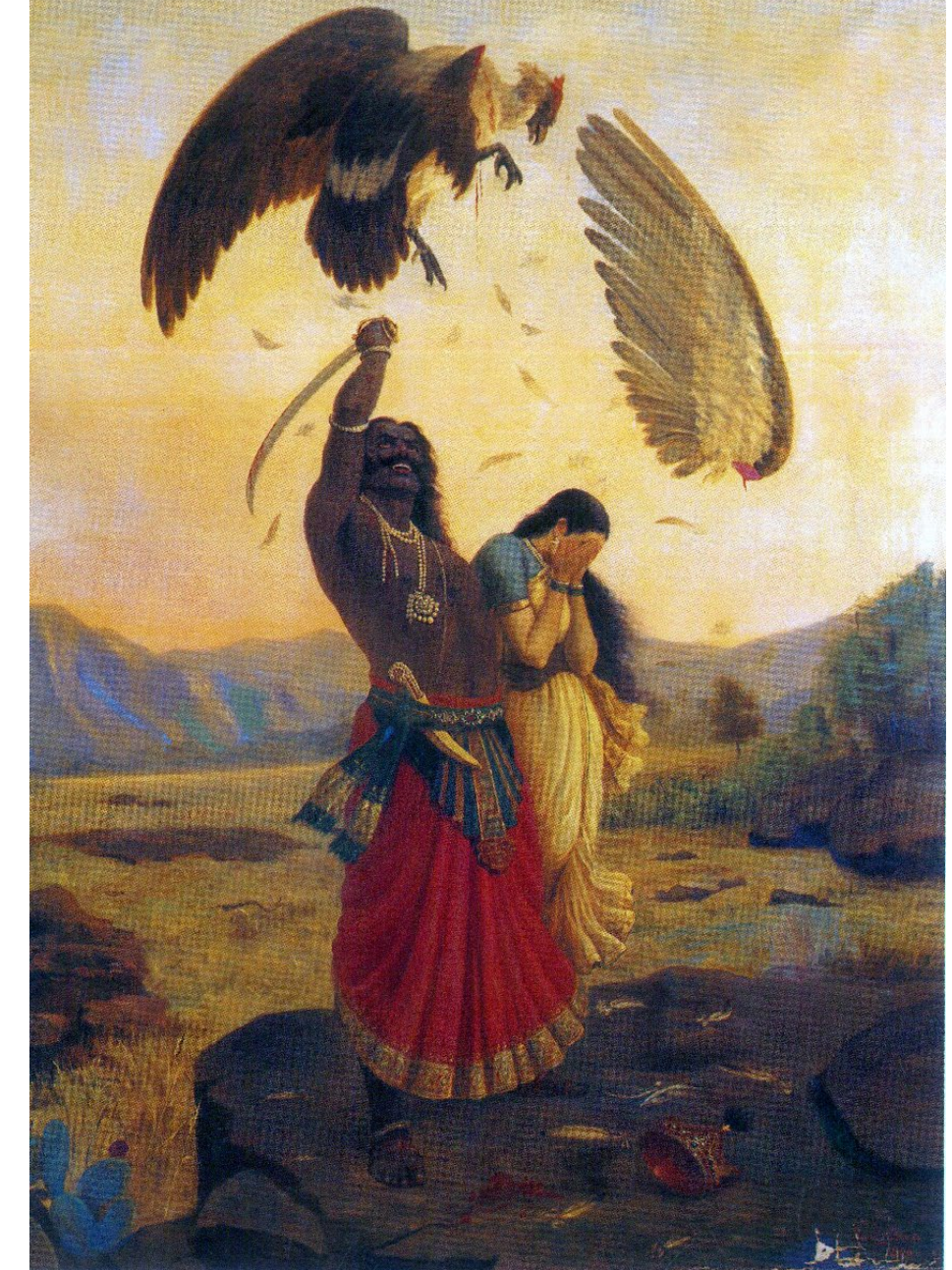
हालाँकि, उस बात को नज़रअंदाज़ करके, हालात के दबाव में रावण, मारीच के साथ मिलकर राम के आश्रम की ओर गया।

तेन मायाविना दूरम् अपवाह्य नृप-आत्मजौ ।

जहार भार्याम् रामस्य गृध्रम् हत्वा जटायुषम् ॥१-४२॥

tena māyāvinā dūram apavāhya nṛpa-ātmajau |
jahāra bhāryām rāmasya gṛdhram hatvā jaṭāyuṣam ||1-42||

मायावी के ज़रिए दोनों राजकुमारों को दूर ले जाने और गिद्ध जटायु को घायल करने के बाद, वह राम की पत्नी को उठा ले गया।



गृध्रम् च निहतम् दृष्ट्वा हताम् श्रुत्वा च मैथिलीम् ।

राघवः शोक-संतप्तः विललाप आकुल-इन्द्रियः ॥१-४३॥

grdhram ca nihatam dr̥ṣṭvā hṛtām śrutvā ca maithilīm |
rāghavaḥ śoka-saṁtaptaḥ vilalāpa ākula-indriyaḥ ||1-43||

गिद्ध को घायल अवस्था में देखकर और सीता के अपहरण की बात सुनकर, राम दुख की आग में जलते हुए और व्याकुल होकर जोर-जोर से विलाप करने लगे ।

ततस् तेन एव शोकेन गृध्रम् दग्ध्वा जटायुषम् ।

मार्गमाणः वने सीताम् राक्षसम् संददर्श ह ॥१-४४॥

tatas tena eva śokena grdhram dagdhvā jaṭāyuṣam |
mārgamāṇaḥ vane sītām rākṣasam saṁdadarśa ha ||1-44||

फिर उसी दुख के साथ, गिद्ध जटायु का अंतिम संस्कार करने और जंगल में सीता को खोजने के दौरान, उन्होंने एक राक्षस को देखा ।

कबन्धम् नाम रूपेण विकृतम् घोर-दर्शनम् ।

तम् निहत्य महाबाहुः ददाह स्वर-गतः च सः ॥१-४५॥

kabandham nāma rūpeṇa vikṛtam ghora-darśanam |
tam nihatya mahā-bāhuḥ dadāha svar-gataḥ ca saḥ ||1-45||

कबंध नाम के, बेडौल और डरावने रूप वाले उस राक्षस को मारकर, बलशाली भुजाओं वाले राम ने उसे आग में डाल दिया और वह आकाश में चला गया ।



स च अस्य कथयामास शबरीम् धर्म-चारिणीम् ।

श्रमणीम् धर्म-निपुणाम् अभिगच्छ इति राघव ।

सः अभ्यगच्छत् महा-तेजाः शबरीम् शत्रु-सूदनः ॥१-४६॥

sa ca asya kathayāmāsa śabarīm dharma-cāriṇīm ।

śramaṇīm dharma-nipuṇām abhigaccha iti rāghava ।

saḥ abhyagacchat mahā-tejāḥ śabarīm śatru-sūdanaḥ ॥1-46॥

शबर्या पूजितः सम्यक् रामः दशरथ-आत्मजः ।

पम्पा-तीरे हनुमता संगतः वानरेण ह ॥१-४७॥

śabaryā pūjitaḥ samyak rāmaḥ daśaratha-ātmajaḥ ।

pampā-tīre hanumatā saṁgataḥ vānareṇa ha ॥1-47॥

हनुमत्-वचनात् च एव सुग्रीवेण समागतः ।

सुग्रीवाय च तत् सर्वम् शंसत् रामः महा-बलः ॥१-४८॥

hanumat-vacanāt ca eva sugrīveṇa samāgataḥ ।

sugrīvāya ca tat sarvam śaṁsat rāmaḥ mahā-balaḥ ॥1-48॥

कबंध ने कहा था, "हे राम, शबरी के पास जाओ; वह धर्म का पालन करने वाली और धर्म में निपुण तपस्विनी है।" शत्रुओं का नाश करने वाले और महान तेज वाले राम शबरी के पास पहुँचे।

शबरी द्वारा सम्मानित, दशरथ के पुत्र राम वास्तव में पंपा नदी के तट पर वनवासी हनुमान से मिले।

इसके अलावा, हनुमान की बात सुनकर और सुग्रीव से मिलकर, शक्तिशाली राम ने उन्हें भी वह सब कुछ बताया।



ततः वानर-राजेन वैर-अनुकथनम् प्रति ।

रामाय आवेदितम् सर्वम् प्रणयात् दुःखितेन च ।

वालिनः च बलम् तत्र कथयामास वानरः ॥१-४९॥

tataḥ vānara-rājena vaira-anukathanam prati ।

rāmāya āveditam sarvam praṇayāt duḥkhitenā ca ।

vāliṇaḥ ca balam tatra kathayāmāsa vānaraḥ ॥1-49॥

प्रतिज्ञातम् च रामेण तदा वालि-वधम् प्रति ।

सुग्रीवः शङ्कितः च आसीत् नित्यम् वीर्येण राघवे ॥१-५०॥

pratijñātam ca rāmeṇa tadā vāli-vadham prati ।

sugrīvaḥ śaṅkitaḥ ca āsīt nityam vīryeṇa rāghave ॥1-50॥

राघवः प्रत्यय-अर्थम् तु दुन्दुभेः कायम् उत्तमम् ।

पाद-अङ्गुष्ठेन चिक्षेप संपूर्ण दश-योजनम् ॥१-५१॥

rāghavaḥ pratyaya-artham tu dundubheḥ kāyam uttamam ।

pāda-aṅguṣṭhena cikṣepa sampūrṇaṁ daśa-yojanam ॥1-51॥

फिर, दोस्ती के नाते, वानरों के दुखी राजा ने राम को दुश्मनी की सारी बातें बताईं उस बातचीत में, वानर ने बालि की ताकत के बारे में भी बताया ।

और फिर राम बाली को मारने का वादा करते हैं, लेकिन सुग्रीव को हमेशा राम की ताकत पर शक रहता है ।

राम ने अपने पैर के अंगूठे से दुंदुभि के विशाल शरीर को पूरे दस योजन दूर फेंक दिया, ताकि पक्का भरोसा हो सके ।



बिभेद च पुनः सालान् सप्त एकेन महा-इषुणा ।

गिरिम् रसातलम् च एव जनयन् प्रत्ययम् तदा ॥१-५२॥

bibheda ca punaḥ sālān sapta ekena mahā-iṣuṇā ।

girim rasātalam ca eva janayan pratyayam tadā ॥1-52॥

इसके बाद, एक ज़बरदस्त बाण से उन्होंने सात साल के पेड़ों, पहाड़ और यहाँ तक कि जलमग्न पाताल लोक को भी चीर डाला, और इस तरह सबको आश्चस्त किया ।

ततः प्रीत-मनाः तेन विश्वस्तः स महा-कपिः ।

किष्किन्धाम् राम-सहितः जगाम च गुहाम् तदा ॥१-५३॥

tataḥ prīta-manāḥ tena viśvastaḥ sa mahā-kapiḥ ।

kiṣkindhām rāma-sahitaḥ jagāma ca guhām tadā ॥1-53॥

तब प्रसन्न मन वाले और उनसे आश्चस्त महान वानर, राम के साथ किष्किन्धा गुफा की ओर चल पड़े ।

ततः अगर्जत् हरि-वरः सुग्रीवः हेम-पिङ्गलः ।

तेन नादेन महता निर्जगाम हरि-ईश्वरः ॥१-५४॥

tataḥ agarjat hari-varaḥ sugrīvaḥ hema-piṅgalaḥ ।

tena nādena mahatā nirjagāma hari-īśvaraḥ ॥1-54॥

तब सुनहरे-भूरे रंग वाले चुने हुए वानर, सुग्रीव ने दहाड़ लगाई। उनकी ज़बरदस्त गूँजती आवाज़ सुनकर वानरों के स्वामी बाहर आए ।



ततः सुग्रीव-वचनात् हत्वा वालिनम् आहवे ।

सुग्रीवम् एव तत् राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥१-५५॥

tataḥ sugrīva-vacanāt hatvā vālinam āhave ।

sugrīvam eva tat-rājye rāghavaḥ pratyapādayat ॥1-55॥

फिर सुग्रीव की बात मानकर, युद्ध में बाली को मारकर, राम ने सुग्रीव को ही उस राज्य पर बिठाया ।

स च सर्वान् समानीय वानरान् वानर-ऋषभः ।

दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुः जनक-आत्म-जाम् ॥१-५६॥

sa ca sarvān samānīya vānarān vānara-ṛṣabhaḥ ।

dīśaḥ prasthāpayāmāsa didṛkṣuḥ janaka-ātma-jām ॥1-56॥

साथ ही, वानरों में श्रेष्ठ ने सभी को इकट्ठा करके, जनक की पुत्री को खोजने की इच्छा से वानरों को अलग-अलग दिशाओं में भेज दिया ।

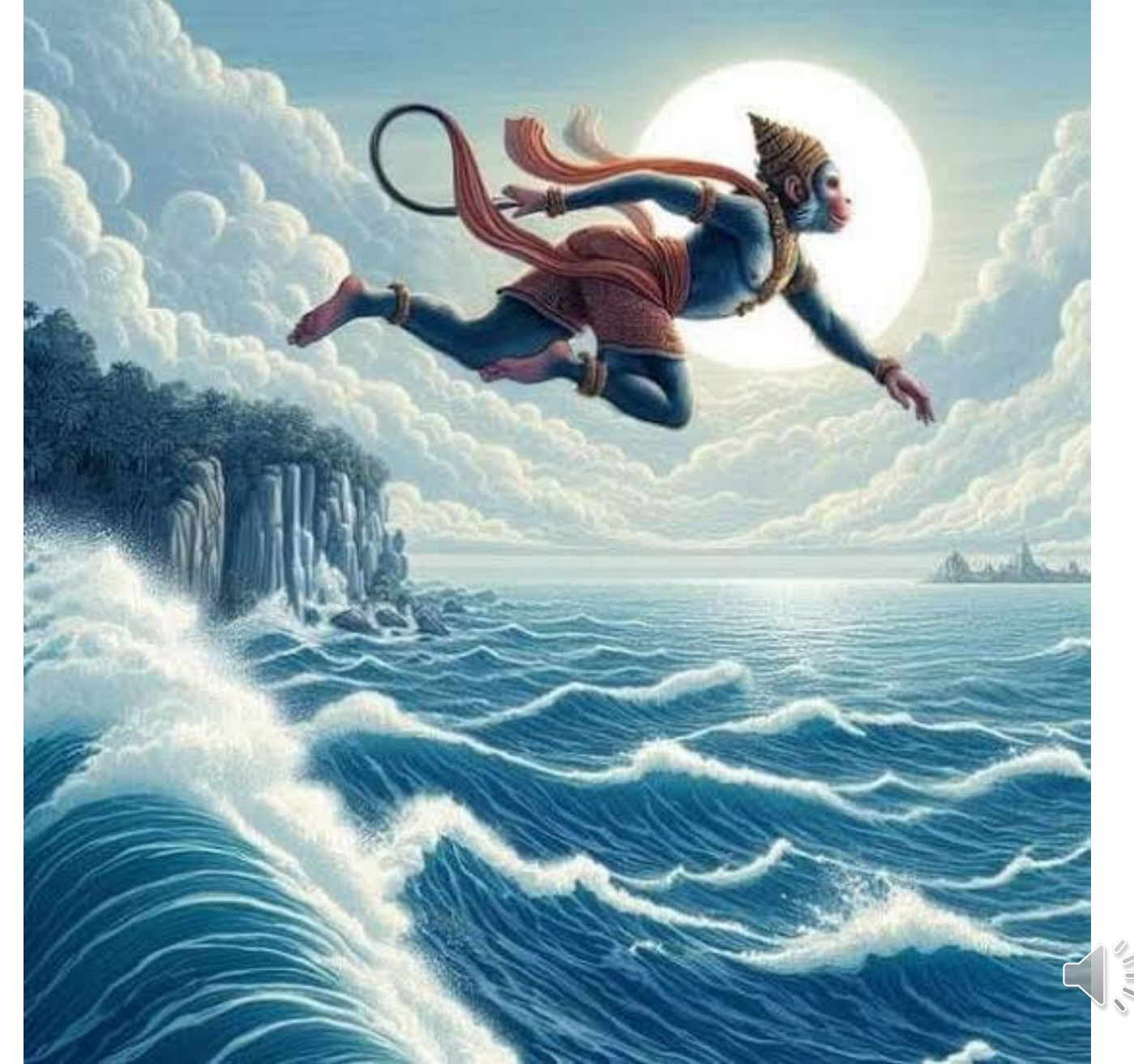
ततः गृध्रस्य वचनात् सम्पातेः हनुमान् बली ।

शत-योजन-विस्तीर्णम् पुप्लुवे लवण-अर्णवम् ॥१-५७॥

tataḥ gṛdhrasya vacanāt sampāteḥ hanumān balī ।

śata-yojana-vistīrṇam pupluve lavaṇa-arṇavam ॥1-57॥

फिर गिद्ध संपाति की बात सुनकर, शक्तिशाली हनुमान ने सौ योजन चौड़े खारे समुद्र को छलांग लगाकर पार किया ।



तत्र लङ्काम् समासाद्य पुरीम् रावण-पालिताम् ।
ददर्श सीताम् ध्यायन्तीम् अशोक-वनिकाम् गताम् ॥१-५८॥

tatra laṅkāṁ samāsādyā purīm rāvaṇa-pālitām |
dadarśa sītām dhyāyantīm aśoka-vanikām gatām ||1-58||

इसके बाद रावण द्वारा सुरक्षित नगरी लंका पहुँचकर, उन्होंने अशोक वाटिका में बैठी सीता को विचारमग्न अवस्था में देखा ।

निवेदयित्वा अभिज्ञानम् प्रवृत्तिम् च निवेद्य च ।
समाश्वास्य च वैदेहीम् मर्दयामास तोरणम् ॥१-५९॥

nivedayitvā abhijñānam pravṛttim ca nivedya ca |
samāśvāsyā ca vaidehīm mardayāmāsa toraṇam ||1-59||

इसके अलावा, अपनी पहचान बताने और घटनाओं के क्रम के बारे में उन्हें सूचित करने तथा सीता को सांत्वना देने के बाद, उन्होंने द्वार को नष्ट कर दिया ।

पञ्च सेना-अग्र-गान् हत्वा सप्त मन्त्रि-सुतान् अपि ।
शूरम् अक्षम् च निष्पिष्य ग्रहणम् समुपागमत् ॥१-६०॥

pañca senā-agra-gān hatvā sapta mantri-sutān api |
śūram akṣam ca niṣpiṣya grahaṇam samupāgamat ||1-60||

सेना के पाँच सेनापतियों और मंत्रियों के सात बेटों को मारने, तथा रावण के वीर पुत्र को कुचलने के बाद, वह बंदी बना लिया गया ।



अस्त्रेण उन्मुक्तम् आत्मानम् ज्ञात्वा पैतामहात् वरात् ।
मर्षयन् राक्षसान् वीरः यन्त्रिणः तान् यदृच्छया ॥१-६१॥
astreṇa unmuktam ātmānam jñātvā paitāmahāt varāt ।
marṣayan rākṣasān vīraḥ yantriṇaḥ tān yadṛcchayā ॥1-61॥

ततः दग्ध्वा पुरीम् लङ्काम् ऋते सीताम् च मैथिलीम् ।
रामाय प्रियम् आख्यातुम् पुनर् आयात् महा-कपिः ॥६२॥
tataḥ dagdhvā purīm laṅkāṁ ṛte sītām ca maithilīm ।
rāmāya priyam ākhyātum punar āyāt mahā-kapiḥ ॥62॥

सः अभिगम्य महा-आत्मानम् कृत्वा रामम् प्रदक्षिणम् ।
न्यवेदयत् अमेय-आत्मा दृष्टा सीता इति तत्त्वतः ॥१-६३॥
saḥ abhigamya mahā-ātmānam kṛtvā rāmam pradakṣiṇam ।
nyavedayat ameya-ātmā dṛṣṭā sītā iti tattvataḥ ॥1-63॥

पूर्वजों से मिले वरदान के कारण हथियारों से
खुद को मुक्त जानकर, वह वीर उन अत्याचारी
राक्षसों का स्वेच्छा से सामना करता रहा...

...फिर लंका नगरी को जलाने के बाद,
मिथिला के राजा की बेटी सीता को छोड़कर,
वह महान वानर राम को यह सुखद समाचार
सुनाने के लिए वापस लौट आया ।

असीम स्वरूप वाले उन्होंने, महान स्वरूप
वाले राम के पास पहुँचकर और उनकी घड़ी
की सुई की दिशा में परिक्रमा करके, मुख्य
बात बताई कि "सीता दिख गई हैं।"



ततः सुग्रीव-सहितः गत्वा तीरम् महा-उदधेः ।

समुद्रम् क्षोभयामास शरैः आदित्य-संनिभैः ॥१-६४॥

tataḥ sugrīva-sahitaḥ gatvā tīram mahā-udadheḥ ।

samudram kṣobhayāmāsa śaraiḥ āditya-saṁnibhaiḥ ॥1-64॥

फिर सुग्रीव के साथ विशाल समुद्र के तट पर पहुँचकर, उन्होंने सूर्य के समान तेजस्वी बाणों से समुद्र को कंपा दिया ।

दर्शयामास च आत्मानम् समुद्रः सरिताम् पतिः ।

समुद्र-वचनात् च एव नलम् सेतुम् अकारयत् ॥१-६५॥

darśayāmāsa ca ātmānam samudraḥ saritām patiḥ ।

samudra-vacanāt ca eva nalam setum akārayat ॥1-65॥

साथ ही, नदियों के रक्षक समुद्र ने भी दर्शन दिए और समुद्र के कहने पर ही उन्होंने नल से पुल बनवाया ।

तेन गत्वा पुरीम् लङ्काम् हत्वा रावणम् आहवे ।

अभ्यषिञ्चत् स लङ्कायाम् राक्षस-इन्द्रम् विभीषणम् ॥१-६६॥

tena gatvā purīm laṅkām hatvā rāvaṇam āhave ।

abhyaṣiñcat sa laṅkāyām rākṣasa-indram vibhīṣaṇam ॥1-66॥

उस से लंका नगरी जाकर और युद्ध में रावण का वध करके, उन्होंने राक्षसों के सरदार विभीषण का लंका में राज्याभिषेक किया।



कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यम् स-चर-अचरम् ।

स-देव-ऋषि-गणम् तुष्टम् राघवस्य महा-आत्मनः ॥१-६७॥

karmaṇā tena mahatā trailokyam sa-cara-acaram ।

sa-deva-ṛṣi-gaṇam tuṣṭam rāghavasya mahā-ātmanah ॥1-67॥

तथा परम-संतुष्टैः पूजितः सर्व-दैवतैः ।

कृत-कृत्यः तदा रामः विज्वरः प्रमुमोद ह ॥१-६८॥

tathā parama-saṁtuṣṭaiḥ pūjitaḥ sarva-daivatāiḥ ।

kṛta-kṛtyaḥ tadā rāmaḥ vijvaraḥ pramumoda ha ॥1-68॥

देवताभ्यः वरान् प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान् ।

पुष्पकम् तत् समारुह्य नन्दिग्रामम् ययौ तदा ॥१-६९॥

devatābhyaḥ varān prāpya samutthāpya ca vānarān ।

puṣpakam tat samāruhya nandigrāmam yayau tadā ॥1-69॥

राम के उस महान कार्य से तीनों लोक—चल और अचल दोनों—तथा देवताओं और ऋषियों का समूह प्रसन्न है ।

इस प्रकार सभी से सम्मानित और परम संतुष्ट होकर, अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, शांत राम वास्तव में प्रसन्न हुए ।

देवताओं से वरदान प्राप्त करने और वानरों को जीवित करने के बाद, पुष्पक विमान पर सवार होकर वे नन्दीग्राम गए ।



नन्दिग्रामे जटाम् हित्वा भ्रातृभिः सहितः अनघः ।

रामः सीताम् अनुप्राप्य राज्यम् पुनर् अवाप्तवान् ॥१-७०॥

nandigrāme jaṭām hitvā bhrātr̥bhiḥ sahitaḥ anaghaḥ |
rāmaḥ sītām anuprāpya rājyam punar avāptavān ||1-70||

प्रहृष्ट-मुदितः लोकः तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ।

निरामयः अरोगः च दुर्भिक्ष-भय-वर्जितः ॥१-७१॥

prahr̥ṣṭa-muditaḥ lokaḥ tuṣṭaḥ puṣṭaḥ sudhārmikaḥ |
nirāmayāḥ arogaḥ ca durbhikṣa-bhaya-varjitaḥ ||1-71||

न पुत्र-मरणम् केचित् द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित् ।

नार्यः च अविधवाः नित्यम् भविष्यन्ति पति-व्रताः ॥१-७२॥

na putra-maraṇam kecit drakṣyanti puruṣāḥ kvacit |
nāryaḥ ca avidhavāḥ nityam bhaviṣyanti pati-vratāḥ ||1-72||

नन्दीग्राम में, जटाएँ उतारकर और अपने भाइयों के साथ, दोषरहित राम ने सीता को वापस पाकर अपना राज्य पुनः प्राप्त किया ।

जनता खुश और प्रसन्न है, संतुष्ट है, उन्हें भरपूर भोजन मिलता है और वे धर्म-परायण हैं; वे बीमारियों से मुक्त हैं और उन्हें अकाल का कोई डर नहीं है ।

कहीं भी किसी बच्चे की मौत देखने को नहीं मिलेगी, और नारीयां विधवा नहीं होंगी और हमेशा अपने पतियों के प्रति समर्पित रहेंगी ।



न वात-जम् भयम् किञ्चित् न अप्सु मज्जन्ति जन्तवः ।
न च अग्नि-जम् भयम् किञ्चित् यथा कृत-युगे तथा ॥१-७३॥
na vāta-jam bhayam kiṁcit na apsu majjanti jantavaḥ ।
na ca agni-jam bhayam kiṁcit yathā kṛta-yuge tathā ॥1-73॥

अश्वमेध-शतैः इष्ट्वा तथा बहु-सुवर्णकैः ।
गवाम् कोटि-अयुतम् दत्त्वा विद्वद्भ्यः विधि-पूर्वकम् ॥१-७४॥
aśvamedha-śataiḥ iṣṭvā tathā bahu-suvarṇakaiḥ ।
gavām koṭi-ayutam dattvā vidvadbhyaḥ vidhi-pūrvakam ॥1-74॥

राज-वंशान् शत-गुणान् स्थापयिष्यति राघवः ।
चातुर्वर्ण्यम् च लोके अस्मिन् स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति ॥१-७५॥
rāja-vaṁśān śata-guṇān sthāpayiṣyati rāghavaḥ ।
cāturvarṇyam ca loke asmin sve sve dharme niyokṣyati ॥1-75॥

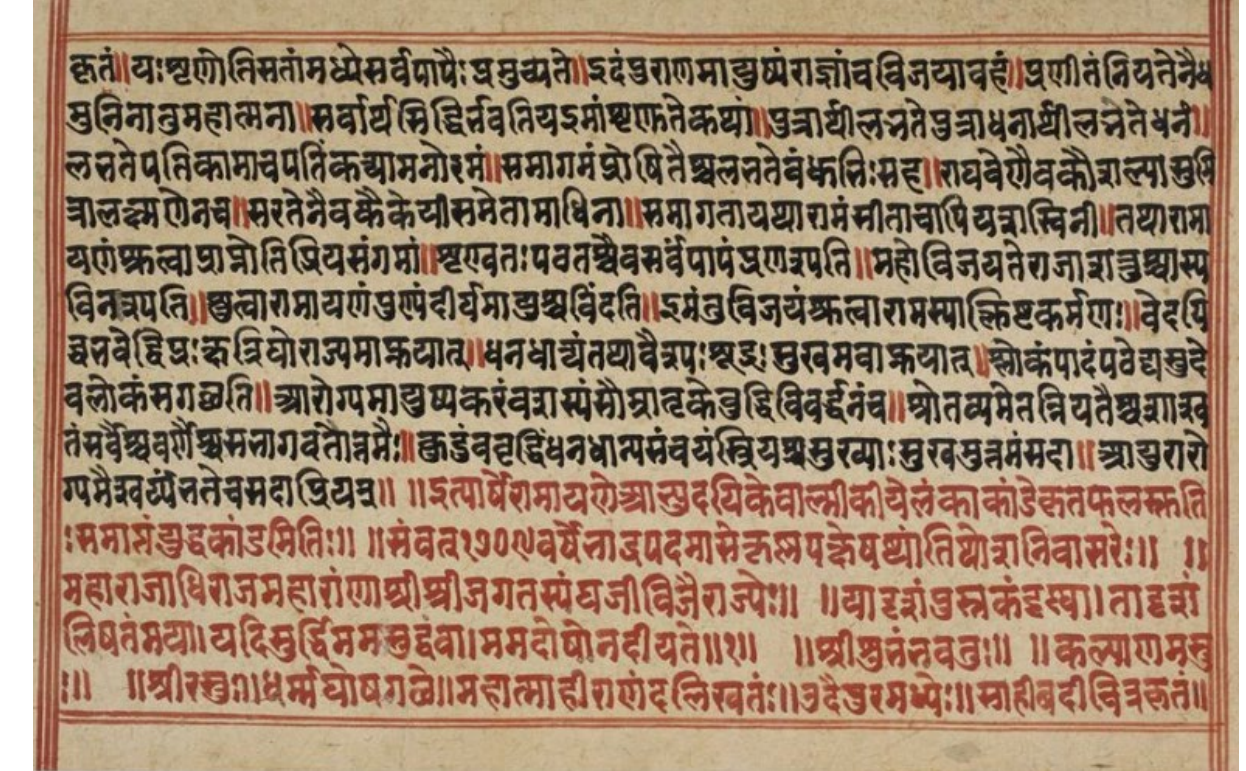
हवा से कोई डर नहीं होता, न ही पानी में
डूबने का डर होता है। आग से भी कोई डर
नहीं लगता। सतयुग में ऐसा ही होता है।

सोने की प्रचुर सामग्री के साथ सौ अश्वमेध
यज्ञ करके और पुरानी परंपरा के अनुसार
विद्वानों को अनगिनत गायेँ दान करके...

...राम सौ राज-वंशों की स्थापना करेंगे और
इस प्रजा में चारों वर्णों को उनके अपने-अपने
धर्म में लगाएँगे।



दश-वर्ष-सहस्राणि दश-वर्ष-शतानि च । रामः राज्यम् उपासित्वा ब्रह्म-लोकम् गमिष्यति ॥१-७६॥ daśa-varṣa-sahasrāṇi daśa-varṣa-śatāni ca । rāmaḥ rājyam upāsitvā brahma-lokam gamiṣyati ॥1-76॥	दस हजार और एक हजार वर्षों तक राज्य की सेवा करने के बाद, राम ब्रह्मलोक चले जाएँगे ।
इदम् पवित्रम् पाप-घ्नम् पुण्यम् वेदैः च संमितम् । यः पठेत् राम-चरितम् सर्व-पापैः प्रमुच्यते ॥१-७७॥ idam pavitram pāpa-ghnam puṇyam vedaiḥ ca saṁmitam । yaḥ paṭhet rāma-caritam sarva-pāpaiḥ pramucyate ॥1-77॥	यह पवित्र करने वाली और पापों को नष्ट करने वाली पुण्य-कथा वेदों के समान ही है। जो कोई भी राम की कथा पढ़ेगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाएगा ।
एतत् आख्यानम् आयुष्यम् पठन् रामायणम् नरः । स-पुत्र-पौत्रः स-गणः प्रेत्य स्वर्गे महीयते ॥१-७८॥ etat ākhyānam āyuṣyam paṭhan rāmāyaṇam naraḥ । sa-putra-pautraḥ sa-gaṇaḥ pretya svarge mahīyate ॥1-78॥	जो व्यक्ति रामायण की इस व्याख्या को पढ़ता है—जिससे लंबी आयु मिलती है—वह मृत्यु के बाद अपने बच्चों, पोते-पोतियों और साथियों के साथ प्रकाश के लोक में सम्मानित होता है ।



पठन् द्विजः वाक्-ऋषभत्वम् ईयात् स्यात् क्षत्रियः भूमि-पतित्वम् ईयात् ।

वणिक्-जनः पण्यफलत्वम् ईयात् जनः च शूद्रः अपि महत्त्वम् ईयात् ॥१-७९॥

paṭhan dvijaḥ vāk-ṛṣabhatvam īyāt syāt kṣatriyaḥ bhūmi-patitvam īyāt |

vaṇik-janaḥ paṇyaphalatvam īyāt janaḥ ca śūdraḥ api mahattvam īyāt || 1-79 ||

पढ़ने से पढ़े-लिखे लोग वाक्-कुशलता प्राप्त करें ।

यदि कोई राज्य का रक्षक हो, तो उसे प्रभुत्व प्राप्त हो ।

व्यापारी वर्ग को लाभ मिले, और

यहाँ तक कि दूसरों की सेवा करने वाले व्यक्ति को भी सम्मान और वैभव प्राप्त हो ।

